International Journal of Enhanced Research in Management & Computer Applications
ISSN: 2319-7471, Vol. 4 Issue 8, August-2015

सैंधवकालीन धर्म : एक अवलोकन

राजीव कुमार खत्री
U.G.C. - NET
शोधार्थी, इतिहास विभाग, पटना विश्वविद्यालय, पटना

सैंधव सभ्यता या हड़प्पा सभ्यता के संबंध में लिखित स्रोत जो अबतक अपठनीय है, के कारण पुरातात्विक स्रोतों पर निर्भर रहना पड़ता है। लिखित साक्ष्यों के अभाव के कारण व्यवस्थित ढंग से कुछ भी कहना उचित प्रतीत नहीं हो सकता है परन्तु पुरातात्विक स्रोतों से उनके धमिक प्रवृत्ति को समझा जा सकता है। भारतीय संस्कृति अपनी परंपरा को बनाए रखने में सक्षम रही है। वर्तमान समय में जो धर्म सामान्य बोल–चाल की भाषा में है जैसे– हिन्दू, बौध, जैन आदि धर्मों का बीज सैंध्वकाल में देखा जा सकता है। अब तक सिन्धु सभ्यता की लिपि पढ़ा नहीं जा सका है, इस प्रकार तत्कालीन पुरातात्विक निष्कर्ष अंतिम रूप से मान्य नहीं है। ज्यों–ज्यों खोजें सामने आती जाती है त्यों–त्यों विद्वानों के विचारों में स्वभावतः परिवर्तन होता जाता है।[1] ज्ञात साक्ष्यों से भारतीय धर्म की निरंतरता सिध होती है, जो आज भी प्रचलित है।

सैंध्व सभ्यता में पुरातात्विक स्रोतों के रूप में मोहनजोदड़ों से एक 'पुजारी का सिर', मोहनजोदड़ों से ही एक कास्यं 'नर्तकी', हडप्पा से एक 'नर–कबंध' की प्रस्तर मूर्ति और हड़प्पा से ही एक मृत्युमुद्रा में मूर्ति, मोहनजोदड़ो से एक मीटर पर योगी की आकृति, लिंगीय प्रस्तरों, माहदेवी की मृणमूर्तियों, हवन–कुंड आदि धर्मिक पुरातात्विक स्रोतों की प्राप्ति हुई है।

धार्मिक – आस्था से संबंध्ति प्राप्त पुरातत्व सामाग्रियों की सूची व विवरण :

मानव आकृतियाँ

मोहनजोदड़ो से प्राप्त सेलखड़ी पत्थर की एक खंडित मानव आकृति जिसका सिर से वक्षस्थल तक का ही भाग बचा है। इसे कुछ लोग पुरोहित **बुद्ध** का मूर्ति बताते हैं।

धर्मिक भवन–

व्हीलर के अनुसार मोहनजोदड़ों के उत्खनन क्षेत्रा में दो या तीन ऐसे भवन हैं, जो मंदिर हो सकते थे। 'एच आर' क्षेत्रा में एक आयताकार घर, जो छोटा किन्तु सुदृढ़ और महत्वपूर्ण है, में प्रवेश के लिए द्वार और दो सीढ़ियाँ है। इस भवन में पत्थर की दो मूर्तियाँ मिली थी।[3]

तालाब–

मोहेंजोदड़ों से मोटी दीवालों से बनी विशाल सुदृढ़ इमारत मिली, जिसे 'विशाल स्नानागार' नाम दिया गया है। इसके आंगन में एक कुंड है, उसका प्रयोग कदाचित धर्मिक पर्व में विशिष्ट व्यक्तियों के स्नान कार्य के लिए होता था।

नारी मृणमूर्तियाँ–

हड़प्पा मोहेंजोदड़ो, चन्हुदड़ो इत्यादि स्थलों की खुदाईयों में मिट्टड्डी की अनेक नारी आकृतियाँ उपलब्ध हुई है। वे प्रायः पंखाकार शिरो–भूषा, कई लड़ी वाले हार, चूड़ियाँ, मेखला तथा कर्णाभरन पहने हैं पंखाकार शिरो–भूषा, के दोनों ओर दायें बाय दीपक जैसी आकृतियाँ बनी हैं जिनमें कालिख लगी मिलती है। कालिख इस बात का द्योतक लगतो है कि इनमें दीप–बाती या धूप जलाई गई होगी। किसी–किसी मूर्ति में नारी के साथ शिशु भी दिखाया गया है। गर्भिणी नारी का रूपांकन मूर्तियाँ भी मिली है। बलूचिस्तान स्थित कुल्ली नामक पुरास्थल में पायी गयी नारी मृणमूर्तियों में सौम्य रूप मिलत है, लेकिन उसी क्षेत्रा की झोब संस्कृति की नारी मृण्मूर्तियों में रौद्र रूप व्यक्त हुआ है। हड़प्पा से प्राप्त एक अभिलेख युक्त मुद्रा पर दाहिनी और एक स्त्राी सिर के बल खड़ी है। उसकी योनी से एक पौध प्रस्पफटित होता दिखलाया गया है। बायें ओर दो बाघ है। यह चित्रा संभवतः प्रजनन शक्ति वाले स्वरूप को स्पष्ट करता है।

पाषाण–चक्र –

मोहेंजोदड़ो तथा हड़प्पा से पत्थर के चक्र विशाल संख्या में पाये गये हैं। इसका व्यास 1.27 सेमी से 121 मीटर तक है। इनमें से कुछ चक्रों पर वृक्षों या पशुओं के साथ–साथ नग्न नारी आकृतियाँ दिखाई गई हैं। संभवतः इसका संबंध भी मातृ देवी की उपासना से था।

'शिव–पशपति' मुद्रा –

मोहेंजोदड़ो के उत्खननों से एक महत्वपूर्ण मुद्रा उपलब्ध हुई, जिससे सिन्धु संस्कृति के लोगों के धर्मिक विश्वास पर महत्वपूर्ण प्रकाश पड़ा है। इस मुद्रा पर मार्शल के अनुसार एक पुरुष आकृति अंकित है जो त्रिमुखी लगती है। वह योगासन में एक चौकी पर बैठी है। उसके सिर पर सींग की सी आकृति बनती है। कलाई से कंधे तक उसकी भुजाएँ चूड़ियों से लदी है। उसका वक्ष कवच से आवृत है। आकृति की दायी ओर हाथी और बाघ तथा बायी ओर गैंडा और महिष हैं। आसन के नीचे दो हरिण दिखलाये गये थे जिनमें से एक की आकृति खंडित है। मुद्रा पर सिन्धु लिपि में लेख भी है। मार्शल इस मुद्रा पर अंकित आकृति को 'शिव पशुपति' का प्राग् रूप मानते हैं।

मोहेंजोदड़ो से प्राप्त दो अन्य मुद्राओं पर भी इससे मिलती–जुलती आकृतियाँ मिली हैं। इनमें से एक ने देवता चौकी पर योगासन मुद्रा में बैठा है, हाथ दोनों ओर पफैलाये हैं और हाथों में कई चूड़ियाँ पहने हैं। आकृति शृंगशुक्त है। मकाई के अनुसार ये सींग ;?द्ध सिर से जुड़े नहीं है। शिरोभूषा के रूप में एक टहनी है, जिसमें पीपल जैसी पत्तियाँ निकलती दिखाई गयी हैं। आकृति त्रिमुखी है, एक मध्यवर्ती और दो पार्श्ववर्ती मुख्य हैं। दूसारी मुद्रा पर की आकृति भी शृंगायुक्त है तथा उसके सिर से वनस्पति निकलती दिखायी गई है लेकिन यह एकमुखी है और भूमि पर बैठी है। इन आकृतियों की वनस्पति के देवता होने की संभावना है। इन दीनों आकृतियों और 'शिव पशुपति' की आकृति में पर्याप्त समानता है, यथा तीनों लंगोट जैसे वस्त्रा पहने हैं और शेष शरीर नग्न है, तीनों हाथों में कई कंगन पहने हैं और तीनों शृंगयुक्त है। किन्तु केवल दो के ही सिर से वनस्पति निकलती दिखायी गई है। दो त्रिमुखो एवं एक एकमुखी है। **कालीबंगा** के एक मृत्पिंड पर एक ओर सींग वाले देवता का अंकन है, दूसरी ओर मानव बलि के लिए लाई गयी बकरी ;?द्ध को दिखाया है। मोहेंजोदड़ो की एक मुद्रा पर एक आकृति है जो आधर मानव आधर बाघ है। इसके सींग हैं। और जिनके बीच से पफल और पत्त निकल रही है। चोटी भी है। अगर यह आकृति पुरुष की है तो यह भी 'शिव' का प्राग्रूप ही सकता है।[4]

पशु सहित देवता :–

हड़प्पा की एक मुद्रा पर मध्य में कोई आकृति बैठी हो जो किसी देवता की लगती है। कुछ जानवर भी दिखाये गए है, जिसकी पहचान करना कठिन है। एक पेड़ भी दिखाया गया है, जिस पर बने मचान पर एक आदमी बैठा है। पेड़ के नीचे बाघ है। इस मुद्रा के दूसरी ओर एक बैल त्रिशूल के सम्मुख खड़ा है। पिफर एक खड़ी आकृति एक काष्ठ ;?द्ध की इमारत के सामने दिखाई गई है। बैठी आकृति की पहचान शिव से की गयी है। बैल उसका वाहन है, त्रिशूल उसका आयुध तथा इमारत उसका पूजा–गृह है। खड़ी आकृति भी शायद उसी देवत का अंकन है।
एक ताम्र पफलक पर पत्ते के बने वस्त्रा पहने पुरुष हाथ में ध्नुष वाण लिए अंकित है। यह वनस्पति या उत्पादिकता शक्ति से संबंध्ति देवता हैं।

एक मुद्रा पर एक व्यक्ति बर्छे से भैंसे पर वार कर रहा है। सिन्धु सभ्यता के कुछ भाण्डों पर सर्प का चित्राण उसके धर्मिक महत्व के कारण हो सकता है। मोहेंजोदड़ों से प्राप्त मिट्टड्डी की एक मुद्रा पर योगसीन मानवाकृति के दोनों ओर एक–एक पुरुष खड़े अंकित हैं। पुरुष हाथ जोड़े हैं, उनके शरीर के पिछे सर्प के पफन दिखाये गए हैं।[5]

लिंग–

लिंग के समान आकृतियां हड़प्पा संस्कृति के मोहेंजोदड़ों, हड़प्पा, लोथल इत्यादि स्थानों से पर्याप्त संख्या में उपलब्ध हुई है। बड़े आकार का लिंग पत्थ के हैं। कालीबंगा से मिट्टड्डी का इस तरह का एकमात्रा उदाहरण स्वरूप मिला है।

वृक्ष–

मार्शल ने विभिन्न मुद्राओं पर चित्रित वृक्ष पाया है। एक मुद्रा पर एक देवता को एक वृक्ष की शाखाओं के मध्य अंकित किया गया हे। देवता नग्न है, उसके बाल लम्बे हैं एवं सींग त्रिशूल की आकृति के हैं और वह भुजबंध पहने हैं। उसके सामने एक व्यक्ति ;उपासक या लघु देवताद्ध हाथ जोड़े बैठा है। उसके बाल लम्बे और सिर पर सिंग है।

पशु–

एक मुदा पर एक–शृंगी पशु के तीन सिर दिखाये गए हैं। इसमें नीचे के सींग भैंसे के और बीच और ऊपर के सिर और सींग बकरे के हैं। एक दूसरे उदाहरण में एक–शृंगी पशु के शरीर से निकले तीन सिरों में सबसे नीचे वाला भैंसे का, उसके ऊपर वाला एक–शृंगी पशु का और उसके ऊपर बकरे का है। एक अन्य मुद्रा में तीन बाघों के शरीर एक–दूसरे से गुंथे हुए दिखाये गए हैं।

मोहेंजोदड़ो से मकाई को एक ऐसी मुद्रा मिली है जिसपर एक–शृंगी पशु और गैंडे के शरीर के अवयवों का समाकलित रूप है। इसका शरीर तो एक–शृंगी पशु का है किन्तु कान, सींग, और पैर गैंडे के हैं। मोहेंजोदड़ो की कुछ मुद्राओं पर अर्ध–मानव अर्ध–पशु आकृति को शृंग युक्त बाध पर आक्रमण करते हुए अंकित किया गया है। यह दृश्य हड़प्पा की एक मुद्रा तथा राखीगढ़ी से मृण्मय पट्टड्डी पर कुछ परिवर्त्तन के साथ अंकित है।

कालीबगां की एक कलात्मक मुद्रा पर एक स्त्राी के दोनों ओर एक–एक व्यक्ति एक हाथ से पकड़े हुए हैं और उसपर अध्किार करने के लिए एक हाथ में बरछो लिये वार करने को उद्यत हैं। पृष्ठभाग में एक देव आकृति है जिसका ध्ड़ बाघ का, सिर मानव का और सींग बकरी के हैं और उसके हाथ में चूड़ियाँ हैं। इस देवता के आगे पिछे वृक्ष हैं। ये प्रतिद्वन्द्वी पुरुष एक ही तरह के वेशभूषा में हें और एक ही वर्ग के लगते हैं।

हड़प्पा में बैल, भेड़ आदि पशुओं की हड्डियों का ढ़ेर मिला जो सामूहिक पशु–बलि दिये जाने का द्योतक हो सकता है। कालीबंगां में भी पशु –बलि के साक्ष्य मिले हें।

अग्निवेदियाँ और बलि हेतु प्रयुक्त गर्त–

हड़प्पा य मोहेंजोदड़ों से अग्नि कुडों या वेदी के निश्चित प्रमाण प्राप्त नहीं हुए हैं। लेकिन कालबंगां, लोथल तथा कुछ अन्य स्थलों के उत्खनन इस संदर्भ में महत्वपूर्ण और स्पष्ट साक्ष्य प्रस्तुत करते हैं, जो सिन्धु सभ्यता के युग में हवन तथा यज्ञ–बल्कि जैसी प्रथा प्रचलित होने का संकेत करते हैं। लोथल में एक चबूतरे पर ईंट की बनी वेदी मिली हे। इससे बैल ;या गायद्ध की जली हड्डियाँ और उसके साथ सोने का लटकन, कार्नीलियन का मनका, चित्रित मृदभांड के खण्ड और राख मिली। यह लोथल वासियों द्वारा पशुबलि दिये जाने का साक्ष्य लगता है। कालीबंगां में गद्दी के दक्षिणी भाग में चबूतरे के ऊपर कुएँ के पास सात आयताकार अग्निवेदियों एक कतार में मिली। इन वेदिकाओं में राख, कोयला, मिट्टड्डी का बेलनाकार खंभा और मिट्टड्डी के केक मिले।

लोथल के निचले नगर में कई घरों में पफर्श के नीचे, या कच्ची ईंटों के चबूतरे के ऊपर आयताकार या वृत्ताकार मिट्टड्डी के घेरे बने थे। इनमें से कुछ में पशुओं की जली हड्डियाँ, राख, पक्की मिट्टड्डी के तिकोने, मृत्पिण्ड और कुछ में मिट्टड्डी के बर्त्तन भी मिले। इनके आकार प्रकार से इसका धर्मिक महत्व लगता है।[6]

ताबीज, प्रतीक एवं शव–सामग्री–

मोहेंजोदड़ों में बामवर्ती और दक्षिणवर्ती दोनों ही प्रकार के स्वस्तिक पर्याप्त संख्या में मिलते हैं लेकिन हड़प्पा में कुछ अपवादों को छोड़कर ऐतिहासिक काल के समान ही स्वस्तिक दक्षिणवर्ती हें। कुछ मनके व अन्य सामग्री मिले हें जो ताबित का संकेत करते हैं। मरणोपरान्त जीवन में विश्वास था कि शवों के साथ मिट्टड्डी के बर्तन एवं अन्य सामग्री रखी मिली है। शवों को साधरणतः उत्तर –दक्षिण दिशा में लिटाया जाता था। लोथल में तीन कब्रों में दो–दो शवों को गाड़ा गया हे।
उपर्युक्त प्रापत पुरातात्विक सामाग्रियों के आधर पर सैंध्व लोगों के धर्मिक आस्था व विश्वास के संबंध् में अनुमान लगाया जा सकता है। उनके धर्मिक विशेषताओं को निम्नांकित प्रकार से देख सकते हैं :– मातृ शक्ति की पूजा, 2. पश–पूजा, 3. वृक्ष–पूजा, 4. शैव–पशुपति पूजा, 5. नरसिंह ;विष्णुद्ध पूजा, 6. जैन, 7. बौ(, 8. अग्निपूजा, 9. सूर्यपूजा।

मातृ–शक्ति पूजा–

सैंध्व–सभ्यता कास्यंकालीन सभ्यता है। इस काल में मातृदेवी की पूजा की प्रधनता थी। जिसके संबंध में उपर्युक्त वर्णित पुरातात्वि साक्ष्य प्रापत हुए हैं। स्त्राी मृण्मूतियाँ शायद पृथ्वी माता या प्रजजन की देवी के रूप में उपस्थित थी[7] कुछ मद्राओं पर अंकित स्त्राी शक्तियों में महिषासूर मर्दिनी भी प्रतीत होती है।

पशु –पूजा–

प्राप्त पुरातात्विक साक्ष्यों से सि(होता है कि लोग पशुओं की भी पूजा करते थे। जिसका वर्णन उपर्युक्त हो चुका है। नाग की पूजा आज भी होता है।

वृक्ष–पूजा–

केदारनाथ शास्त्री के अनुसार सिंधु सभ्यता काल में मातृदेवी की अपेक्षा पीपल देवता की अधिक महत्ता थी, जिसका अंकन मुद्राओं पर सर्वाधिक हे।[8]

शैव–पशुपति पूजा–

उपर्युक्त वर्णित पुरातात्विक साक्ष्य में पशुपति की मुद्रा प्राप्त होने से स्पष्ट है कि लोग उस समय भी शिव–पशुपति की पूजा करते थे। मार्शल ने इस मूर्ति को आज के भगवान शंकर माना है एवं मैके ने भी शिव की मूर्ति माना है।[9] कुछ लोग इसे पशुपति की मूर्ति मानते हैं।

योगी शिव–

उपर्युक्त वर्णित पुरातात्विक स्रोतों में एक मुद्रा पर योग मुद्रा में ध्यान की स्थिति में बैठे शिव की आकृति का अंकन है।

लिंग–पूजा एवं योग

उपर्युक्त वर्णित लिंग भी अत्यधिक संख्या में मिले हें। अतः उस समय भी लिंग पूजा होती थी। शिव अनादि काल से पूज्य रहे हैं। प्रकृति के विकास एवं उसके साथ समरसता के रूप में दिखाई देते हैं। इसलिए वृक्ष, नाग, पशु आदि के साथ इनकी पूजा होती है। योग के साथ शिव का गहरा संबंध रहा है। प्राचीन भारत में शिव पूजा का श्री गणेश हड़प्पा निवासियों के समय से ही माना जात सकता हे।[10]

विष्णु –पूजा या वैष्णव धर्म–

आध बाघ एवं आध मानव आदि प्राप्त मुद्राओं से नरसिंह अवतार की पूजा का द्योतक है, जो विष्णु से जुड़ा है। हालांकि इस संबंध में स्पष्ट साक्ष्य का अभाव है, पर अनुमान लगाया जा सकता है। क्योंकि विष्णु पालनकर्ता के रूप में जाने जाते हैं एवं समृ(के प्रतीक के रूप में भी। कुछ मुद्राओं पर इस प्रकार का अंकन मिला है। उदाहरणार्थ–

जैन धर्म

सिन्धु घाटी की मूर्तियों में बैल की आकृतियाँ विशेष रूप से मिलती है। 'वृषभ' शब्द का अर्थ है बैल। आदिनाथ या वृषभनाथ जा जैन घर्म के प्रवर्त्तक थे उसका चिन्ह बैल है। सिन्धु घाटी से प्राप्त बैल की आकृति से स्पष्ट है कि जैन धर्म की बीजारोपण हो चुका था।[11]

बाध धर्म–

कुछ मुद्राओं पर हरिण के अंकन बौ(–धर्म की ओर भी संकेत करते हैं श्रीलंका के धर्म नियम ने पाली भाषा में भारत में जन्में 28 बु(ों के नाम उद्घाटित करता है। गौतम बु(28वाँ बु(हैं।[12] इससे स्पष्ट है कि अगर यह सत्य है तो बौ(धर्म का भी बीजारोपण सैंध्व काल में हुआ होगा। बौ(धर्म में पीपल के वृक्ष व पत्तों का भी महत्व है, जो अनेक मुद्राओं पर अंकित है।

अग्नि–पूजा–

कालीबंगां व लोथल आदि से मिले अग्निवेदिकाएँ व कुछ मुद्राओं पर अग्न का प्रतीक अंकित है जो अग्नि पूजा का संकेत करता है।

सूर्य–पूजा–

स्वस्तिक प्रतीक से स्पष्ट है कि लोग सूर्य पूजा भी करते थे। मोहेंजोदड़ों में जो जलाशय मिला है, उसका उपयोग भी धर्मिक रूप से होता था, जिसमें स्नान के साथ सूर्य को अर्घ्य देने का कार्य होता होगा। आज भी सूर्य पूजा नदी या तालाबों में होता है।

निष्कर्षतः सिन्धु सभ्यता के लोगों के धर्मिक जीवन के संबंध में लिखित साक्ष्य प्राप्त न होने से यह कहना कठिन है कि किस देवता का उनके जीवन में सर्वाधिक महत्व एवं मान्यता थी। मार्शल, मकाइ, व्हीलर आदि विद्वानों का मत है कि संभवतः उस युग में मातृदेवी की उपासना सबसे अधिक प्रचलित थी और देवताओं में उसका स्थान सर्वोपरि था।[13]

सिन्धु सभ्यता एक विस्तृत भूभाग में विस्तृत था। सभी क्षेत्राों में एक समान धार्मिक आस्था नहीं था। आज भी यही स्थिति है। सिन्धु सभ्यता के धर्म में देवी–देवताओं की मानव, पशु और प्रतीक तीनों रूपों में कल्पना की गयी है। आज जो भी प्रचलित धर्मिक मान्यताएँ हैं, उसके ऐतिहासिकता की प्रामाणिकता के लिए सैंधव सभ्यता की ओर देखते हैं, जो एकांकी रूप है। जब–तब सैंध्व लिपि पढ़ा नही जा सकेगा, विचार समयानुसार परिवर्तित होते रहेंगे।

संदर्भ–सूची

1. माइकेल विट्जेल, अनुवादक– डॉ॰ नरेन्द्र व्यास, आर्यों के भारतीय मूल्य की कल्पना, ग्रन्थ शिल्पी, नई दिल्ली, प्रथम संस्कारण–2004, पृ॰ 127
2. झा एवं श्रीमाली–प्राचीन भारत का इतिहास, हिन्दी मा॰ कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, पृ॰ 95
3. थपल्याल एवं शुक्ल–सिंधु सभ्यता, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ, अष्टम संस्करण–2015, पृ॰ 173
4. पूर्वोक्त, पृ॰ 182
5. पूर्वोक्त, पृ॰ 182
6. पूर्वोक्त, पृ॰ 194
7. पूर्वोक्त, पृ॰ 196
8. थपल्याल एवं शुक्ल– पृ॰ 195
9. सहाय, प्राचीन भारती धर्म एवं दर्शन, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, प्रथम सं1 2001, षष्ठ पुनर्मुद्रण 2014, पृ॰2
10. सहाय पूर्वोक्त, पृ॰ 3
11. सहाय पूर्वोक्त, पृ॰ 6
12. स्वप्न कुमार विश्वास, बौ(धर्म : मोहनजोदड़ो हड़प्पा नगरों का धर्म, गौतम बुक सेन्टर, दिल्ली, 2012, पृ॰ 34
13. थपल्याल एवं शुक्ल– पृ॰ 195